विचार बिन्दु

हम यहाँ किसी विशेष कारण से हैं। इसीलिए अपने भूत का कैदी बनना छोड़िये। अपने भविष्य के निर्माता बनिए। –रोबिन शर्मा

जीएसटी की 12 प्रतिशत स्लैब में बदलाव से उद्योग और आमजन को मिलेगी राहत

वस्तु एवं सेवा कर यानी कि जीएसटी की चार स्लेबों में से दूसरी 12 प्रतिशत की स्लेब को लेकर जिस तरह की चर्चाएं आम हो रही है उससे मध्य व निम्न वर्ग में आशा का संचार होने लगा है। दरअसल समाज का मध्यम और निम्न वर्ग सबसे अधिक प्रभावित जीएसटी की 12 प्रतिशत वाली स्लेब से ही हो रहे हैं। इन वर्गों से जुडी वस्तुएं या सेवाओं पर लगने वाला कर सीधा सीधा इन्हें प्रभावित करता है। इसका कारण भी साफ है कि दैनिक उपभोग की अधिकांश वस्तुएं इसी स्लेब में आती है। खाने-पीने की वस्तुओं के साथ ही जूते-चप्पल, कपड़े आदि भी इसी स्लेब में आते हैं। हांलाकि विशेषज्ञों के अनुसार 12 प्रतिशत की स्लेब पर निर्णय से सरकार पर 40 से 50 हजार करोड़ रुपए के राजस्व का असर पड़ेगा पर यह भी माना जा रहा है कि बाजार में इन वस्तुओं की मांग बढ़ेगी और मांग बढ़ने से काफी मात्रा में राजस्व पूर्ति हो सकेगी। वैसे भी फ्रीबीज के नाम पर बहुत कुछ जा रहा है तो फिर यदि बड़ी आबादी को राहत और लोकहित में कोई निर्णय किया जाता है तो वह अधिक लाभकारी होता है। हांलाकि इस निर्णय के भी बिहार सहित अन्य राज्यों में होने वाले चुनावों से जोड़कर राजनीतिक अर्थ निकाले जाएंगे पर इस तरह के निर्णयों पर राजनीति करना उचित नहीं कहा जा सकता।

जानकारों के अनुसार जीएसटी काउंसिल की आगामी बैठक में 12 प्रतिशत वाली स्लेब को या तो विलोपित करने पर विचार किया जा सकता है या फिर इसमें से आम उपभोग की वस्तुओं को पांच प्रतिशत की स्लेब के दायरें में लाया जा सकता है। 12 प्रतिशत की स्लेब को विलोपित किया जाता है तो इसके दायरें में आ रही वस्तुएं या सेवाएं 5 प्रतिशत की स्लेब दायरें में आने की अधिक संभावना हैं। यदि विलोपित भी नहीं की जाती है और आज की प्रचलित चार स्लेबों 5 प्रतिशत, 12 प्रतिशत, 18 प्रतिशत और 28 प्रतिशत में से सीधे आम उपभोग की वस्तुओं और सेवाओं को नीचे वाली और शेष को अन्य स्लेबों में समायोजित किया जा सकता है। बढ़ती मंहगाई के कारण आम नागरिकों खासतौर से मध्य और निम्न मध्य वर्ग को राहत दिलाने के लिए इस पर गंभीरता से विचार किया जा रहा है।

जीएसटी अप्रत्यक्ष कर प्रणाली होने के साथ ही समूचे देश में कर की एकरूपता के लिए 1 जुलाई 2017 को जीएसटी लागू की गई थी। देश में असम पहला प्रदेश था जिसने सबसे पहले जीएसटी को अपनाया। अब तो समूचे देश में जीएसटी व्यवस्था लागू हो चुकी है। अब तक जीएसटी काउंसिल की 57 बैठके हो चुकी है और इनमें अनवरत रुप से सुधार व बदलाव किया जाता रहा है। 12 प्रतिशत के बदलाव की चर्चा छेड़कर बैठक से पहले ही बहस छेड़ दी गई है। इसे सकारात्मक भी माना जाना चाहिए क्योंकि जीएसटी स्लेबों के निर्धारत में राज्यों की भी प्रमुख भूमिका होती है। जीएसटी काउंसिल में राज्यों के प्रतिनिधि भी हिस्सा लेते हैं और उसी में निर्णय किया जाता है। जीएसटी से संग्रहित होने वाली राशि राज्यों को भी मिलती है तो समूचे देश में एक वस्तु पर एक ही दर लगने से अदायगी राशि एक ही होती है। जीएसटी यानी कि एक राष्ट्र एक कर की अवधारणा अटल बिहारी वाजपेई के प्रधानमंत्री काल में सामने आई थी। डॉ. विजय केलकर की अध्यक्षता में टास्क फोर्स का गठन हुआ। समान कर की बात तो सभी सरकारों द्वारा की जाती रही पर 1 जुलाई 2017 को यह व्यवस्था लागू हो सकी। हांलाकि आमनागरिकों की भारी मांग के बावजूद पेट्रोल-डीजल को अभी तक जीएसटी के दायरें में नहीं लाया जा सका है और इसका कारण भी बड़ा साफ है कि इसमें केन्द्र राज्यों की सभी सरकारों के हित जुड़े हुए हैं। पेट्रोल-डीजल के भाव बढ़ने और इस पर कितना कर लग रहा है इस पर तो पक्ष विपक्ष हल्ला तो बोल लेते हैं पर कभी जीएसटी के दायरें में लाने के सार्थक प्रयास नहीं कर पाये हैं।

जीएसटी काउंसिल की आगामी बैठक में 12 प्रतिशत वाली स्लेब को या तो विलोपित करने पर विचार किया जा सकता है या फिर इसमें से आम उपभोग की वस्तुओं को पांच प्रतिशत की स्लेब के दायरें में लाया जा सकता है। 12 प्रतिशत की स्लेब को विलोपित किया जाता है तो इसके दायरें में आ रही वस्तुएं या सेवाएं 5 प्रतिशत की स्लेब दायरें में आने की अधिक संभावना हैं।

समान कर प्रणाली की अवधारणा सबसे पहले फ्रांस में आई। 1954 में फ्रांस में जीन वेप्टिस्ट कालवर्ट जीएसटी की अवधारणा सामने लाये और इस समान कर प्रणाली की सकारात्मकता का ही परिणाम है कि दुनिया क 160 देशों में जीएसटी जैसी समान कर प्रणाली प्रचलन में है। हमारे देश में 12 प्रतिशत की स्लेब इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है कि दैनिक उपभोग की अधिकांश वस्तुएं इसी कर दायरें में आती है। एक हजार रु. से अधिक के कपड़े जूते से लेकर घी, तेल, मक्खन, डेयरी उत्पाद, सब्जियां, फल, मेवे सहित खाद्य पदार्थ, पेय पदार्थ, 20 लीटर पैक में पीने के पानी की बोतल, कॉटन हैण्ड बैग जूट का सामान, पत्थर और लकड़ी आदि की मूर्तियां, चश्मा, बच्चों की पेंसिल स्लेट, खेल का सामान, यहां तक कि क्लीन एनर्जी डिवाइस सहित बहुत सारी वस्तुएं इस दायरें में आती है। सीधी सी बात यह है कि यह वस्तुएं ऐशो-आराम की वस्तुएं तो है नहीं और कम से कम मध्यवर्गीय परिवार तो इन्हें खरीदता ही है तो निम्न वर्ग परिवार भी दूसरी कटौती या अपना पेट काटकर इन्हें खरिदता है। ऐसे में 12 प्रतिशत की स्लेब पर विचार निश्चित रुप से सकारात्मक संदेश देता है। बैसे भी 12 प्रतिशत की स्लेब को लेकर जो बहस छिड़ी है उसमें सकारात्मक पक्ष ही खुलकर सामने आया है और विशेषज्ञों ने इस स्लेब में किसी तरह के बदलाव को लेकर नकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं दी है। ऐसे में आगामी जीएसटी काउंसिल की बैठक में 12 प्रतिशत की स्लेब में बदलाव करते हुए देश के बड़े वर्ग को राहत दी जाती है तो यह देश की अर्थ व्यवस्था को राहत देने वाला, एमएसएमई सेक्टर को बढ़ावा देने वाला और आम जन के हित का निर्णय होगा। क्योंकि इस स्लेब के अधिकांश उत्पाद एमएसएमई सेक्टर द्वारा ही तैयार किए जाते हैं और स्लेब में बदलाव होने से इन वस्तुओं की मांग बढ़ेगी और इससे सेक्टर में ग्रोथ के साथ ही लोगों को राहत मिल सकेगी।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल गुरूवार 10 जुलाई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र शुक्रवार प्रातः 5:56 तक, ऐन्द्रयन योग रात्रि 9:37 तक, विष्टि करण दिन 1:52 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-धनु, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज भद्रा दिन 1:52 तक रहेगी। आज आषाढ़ी पूर्णिमा, सत्य पूर्णिमा व्रत, गुरू पूर्णिमा, व्यास पूजा है। आज से कोकिला व्रत और चातुर्मास सन्यासियों का आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 7:26 तक, चर 10:50 से 12:32 तक, लाभ-अमृत 12:32 से 3:56 तक, शुभ 5:38 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:44, सूर्यास्त 7:20

मेष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

धनु

घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। मनःस्थिति ठीक रहेगी।

वृष

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। मित्रों/रिश्तेदारों से वाद-विवाद हो सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मिथुन

परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

तुला

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। आज व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कुंभ

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मीन

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

गुरु पूर्णिमा एक तिथि नहीं, बल्कि एक चेतना है

वासुदेव देवनानी

जब जीवन के तम में कोई हाथ पकड़कर उजास की ओर ले जाए, जब दिशा खोता मन किसी की दृष्टि से स्पष्ट हो जाए, तो समझिए, वहीं गुरूत्व है। गुरू पूर्णिमा उसी अदृश्य लेकिन अटल ऊर्जा का उत्सव है। यह पर्व केवल परंपरा नहीं, पीढ़ियों की उस ऋषि परंपरा का स्मरण है, जिसने ज्ञान को केवल शब्दों में नहीं, आचरण में जिया। भारतीय संस्कृति में गुरू कोई पद नहीं, एक परम स्थिति है। वेदव्यास के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाने वाला यह दिन, ज्ञान की नींव रखने वाले प्रत्येक पुरुषार्थी को नमन करने का अवसर है। वेदों का संकलन, महाभारत का लेखन, और पुराणों की रचना-ये सब महर्षि वेदव्यास की ही अमूल्य देनें हैं। इसलिए यह पूर्णिमा केवल एक व्यक्ति को नहीं, ज्ञान को समर्पित है। सिर्फ हिन्दू नहीं, बल्कि बौद्ध, जैन और सिख परंपराओं में भी यह दिन अत्यंत विशेष है। गौतम बुद्ध ने इसी दिन अपना पहला उपदेश दिया था। महावीर स्वामी ने इसी दिन अपने प्रथम शिष्य को दीक्षा दी थी।

गुरू पूर्णिमा केवल एक तिथि नहीं, बल्कि एक चेतना है, जो हर वर्ष हमें याद दिलाती है कि- जीवन में ज्ञान, मार्गदर्शन, अनुशासन और आभार का स्थान सर्वोच्च है। हमारा समाज तभी सशक्त होगा, जब उसमें शिष्य बनने की ललक और गुरू बनने की गरिमा दोनों जीवित रहेंगी। इस दृष्टिकोण से एक गुरू पुस्तक का पन्ना नहीं पलटता, वह दृष्टि बदलता है। वह हमें उत्तर नहीं देता, प्रश्न पूछने की दिशा सिखाता है। वह ज्ञान देता है, लेकिन उससे भी पहले जागरूकता देता है। प्राचीन गुरुकुलों में ज्ञान केवल अक्षरों का संठाह नहीं था, बल्कि चरित्र और संस्कार की शुद्ध प्रक्रिया थी। आज जब हम शिक्षा को केवल नौकरी पाने का साधन बना चुके हैं, तो गुरू पूर्णिमा हमें याद दिलाती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल आजीविका नहीं, आजीवन विवेक है। वैसे भी हर व्यक्ति के भीतर एक गुरू छिपा है- विवेक के रूप में, आत्मा के जागरण व प्रकाश रूप में। गुरू पूर्णिमा बाहरी गुरुओं को प्रणाम का पर्व तो है ही, साथ ही यह आ ान भी है कि- अपने भीतर के गुरू को जगाओ। क्योंकि जब तक हम खुद को न समझें, तब तक कोई गुरू हमें क्या समझा सकता है ? ज्ञान का बीज तभी फलता है, जब उसकी भूमि संस्कारों से सिंचित हो। गुरु शिष्य को केवल पढ़ाता नहीं, उसे जीवन जीने की रीति भी देता है। आज जब समाज में नैतिक भ्रम, आत्मकेंद्रितता और मूल्यहीनता बढ़ रही है, तब गुरु पूर्णिमा हमें यह याद दिलाती है कि सच्चा गुरु वह है, जो शिष्य को श्रेष्ठ मनुष्य बनने की शिक्षा दे। संस्कार न पाठ्यक्रम में मिलते हैं, न परीक्षाओं से-वे गुरु की प्रेरणा और सान्निध्य में ही अंकुरित होते हैं। आज का युग सूचना से भरा है, लेकिन ज्ञान का अकाल है। गुरू की जगह अब गूगल है, और शिष्य की जिज्ञासा की जगह तात्कालिकता ने ले ली है। ऐसे समय में गुरू पूर्णिमा केवल उत्सव नहीं, एक पुनः स्मरण है कि सही दिशा दिखाने वाले का स्थान सदा विशिष्ट रहेगा। गुरू अब सिर्फ कक्षा में नहीं, जीवन के हर मोड़ पर चाहिए

आज जब बच्चे मोबाइल से सीख रहे हैं, और शिक्षा यूट्यूब तक सीमित हो गई है, तब भी गुरु का स्थान खत्म नहीं हुआ, उसकी भूमिका और अधिक गहरी हो गई है। गुरु अब केवल ज्ञानदाता नहीं, मूल्यनिर्माता और चरित्र-निर्माता बन चुका है। गुरु पूर्णिमा आज एक ऐसा अवसर बन गया है, जहाँ हमें खुद से यह पूछना चाहिए, क्या हम सही गुरु के मार्गदर्शन में हैं? क्या हम उस पथ पर चलने का प्रयत्न कर रहे हैं, जो गुरु ने दिखाया है? और क्या हम स्वयं भी किसी के लिए पथ प्रदर्शक बन पा रहे हैं? यदि नहीं तो हमें यह समझना चाहिए कि- संस्कार, समर्पण और साधना-इन तीनों का समन्वय ही गुरु पूर्णिमा की आत्मा है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि हम केवल किताबी ज्ञान से नहीं, संवाद, समर्पण और साधना से श्रेष्ठ बनते हैं। गुरु पूर्णिमा वह दिन है जब हम अपने जीवन के हर उस व्यक्ति को नमन करें, जिसने हमारी सोच बदली, जिसने कठिन समय में हमारा हाथ थामा, और जिसने हमें हमारे भीतर छिपे श्रेष्ठतम रूप से परिचित कराया। इसलिए आज आवश्यकता केवल गुरु पूजन की नहीं, गुरुता के पुनर्स्थापन की है, और यह तभी संभव है, जब हम स्वयं को भी गुरु के योग्य शिष्य बनाएं।

–वासुदेव देवनानी,
अध्यक्ष राजस्थान विधानसभा

सहमति से जमीनों का बंटवारा होने से परिवार और गांवों में लौट रहा सौहार्द्र

पं. दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के अन्तर्गत आयोजित हो रहे शिविरों में आमजन को योजनाओं का फायदा मिल रहा है

पं. दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के अन्तर्गत आयोजित हो रहे शिविरों में आमजन को ग्राम पंचायत मुख्यालय पर ही आसानी से सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं का फायदा तो मिल ही रहा है। साथ ही, सालों से उलझे हुए राजस्व प्रकरणों का निस्तारण होने से परिवार, गांव और समाज में आपसी सौहार्द्र का रस घुल रहा है। आपसी सहमति से जमीन का बंटवारा होने से कोर्ट और कार्यालयों के चक्कर नहीं काटने पडंगे, समय और धन की बचत के साथ भाईचारा बढ़ रहा है।

दौसा जिले की मण्डावर उपखण्ड की उकरूंद ग्राम पंचायत में आयोजित शिविर में सगे भाई गिर्राज और शिवराम बैरवा ने जमीन बंटवारे के लिए प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया। मण्डावर तहसीलदार ने संवेदनशीलता दिखाते हुए राजस्व टीम के साथ प्रकरण में त्वरित कार्यवाही की और शिविर में ही दोनों भाइयों की जमीन का बंटवारा करवाकर अन्त्योदय के मूल उद्देश्य को चरितार्थ कर दिया।

बिना किसी विवाद के आपसी रजामंदी से बंटवारा होने पर लाभान्वित काश्तकारों के चेहरे पर खुशी छलक पड़ी। उन्होंने यह अभियान चलाने के लिए मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा का आभार जताते हुए कहा कि प्रशसन ने हमारे गांव में ही आकर राजी-खुशी हमारी जमीन का बंटवारा कर दिया। इससे न तो उन्हें कानूनी कार्यवाहियों की जटिलताओं में उलझना पड़ा और न ही राजस्व कार्यालयों के चक्कर काटने पड़े जिससे विधिक एवं अन्य कार्यवाहियों में खर्च होने वाले समय और धन की बचत हुई और दोनों परिवारों के बीच आपसी सौहार्द्र को बनाए रखने में मदद मिली है। हमने जमीन की लड़ाईयों में खूनखराबा और पीढ़ियों तक संघर्ष और कोर्ट-कचहरी के चक्कर काटते परिवार देखे हैं। हम इस अभियान का महत्व समझ सकते हैं।

कई हिस्सेदारों के बीच उलझी जमीन का हुआ बंटवारा :-दौसा जिले की राहुवास तहसील की सलेमपुरा ग्राम पंचायत के मानपुरा गांव में कई हिस्सेदारों के बीच उलझी हुई जमीन का भी आपसी सहमति से ऐसे ही शिविर में बंटवारा कर राहत दी गई। खसरा नंबर 170/43 व 172/11 में भगवान सहाय की पत्नी केसन्ता और पुत्र गणेश एवं दिलखुश तथा जगदीश पुत्र माग्या, रामू पुत्र बिरदा एवं रामकेश व हीरालाल पुत्र कान्या माली सहखातेदार हैं। जमीन का बंटवारा नहीं हो पाने से परेशान खातेदारों ने मानुपरा में लगे शिविर में नायब तहसीलदार को सहमति से विभाजन करने का प्रार्थना पत्र पेश किया। नायब तहसीलदार ने तुरंत विभाजन प्रस्ताव स्वीकार कर जमीन का बंटवारा कर सहखातेदारों को मौके पर ही राहत दी। सहमति विभाजन के आदेश की प्रति हासिल कर सभी खातेदारों ने खुशी व्यक्त की और ऐसे राहतकारी शिविर आयोजित करने के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को धन्यवाद दिया।

सुखदेव बैरवा का जमाबन्दी में नाम सुधरा :-राजस्व रिकॉर्ड जमाबन्दी में अपभ्रंश नाम होने से परेशान गुगोलाव के सुखदेव बैरवा को ग्राम पंचायत मुख्यालय पर लगे शिविर से राहत मिली। लवाण ब्लॉक की ग्राम पंचायत नांगल गोविन्द के गुगोलाव गांव के रहने वाले सुखदेव बैरवा काफी लम्बे समय से जमाबन्दी में अपभ्रंश नाम को शुद्ध करवाने को लेकर परेशान हो रहे थे। इन्हें गत दिनों पंचायत में शिविर लगने की जानकारी मिली तो इन्होंने शिविर में पहुंचकर राजस्व रेकार्ड जमाबन्दी में अपभ्रंश नाम को शुद्ध करने के लिए प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। नायब तहसीलदार राजेश राय व हल्का पटवारी ने मौके पर ही ऑनलाइन शुद्धि पत्र दर्ज कर नाम शुद्ध कर दिया।

अतिक्रमण हटवाकर रास्ता खुलवाया :-ग्राम चक धरणवास के खसरा नम्बर 226 गैर मुमकिन रास्ता काफी समय से अतिक्रमियों द्वारा अवरूद्ध कर रखा था। नांगल गोविन्द में आयोजित शिविर में आम जन ने राजस्व अधिकारियों से इस रास्ते को खुलवाने का आग्रह किया। नायब तहसीलदार राजेश राय और राजस्व कर्मिकों ने त्वरित कार्यवाही करते हुए रास्ते का सीमाज्ञान कर अतिक्रमण हटवाया और रास्ते को सुचारू रूप से चालू करवाया। शिविर में रास्ता खुलने की सौगात मिलने पर ग्रामीणों ने राजस्व टीम की सराहना की।

सोहनलाल, सहायक निदेशक, दौसा जिला सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय।

"गुरु पूर्णिमा" बुद्ध मार्ग पर चलने का संकल्प

बौद्ध राधेश्याम कोली

भगवान बुद्ध ने 2500 वर्ष पूर्व ज्ञान प्राप्ति का आषाढ़ पूर्णिमा के दिन सारनाथ की पवित्र भूमि पर सबसे पहले अपने प्रथम पांच शिष्यों को प्रवचन दिया जो उन्हें रास्ते में ही छोड गये थे उन्होंने इसे दिवस को गुरु पूर्णिमा स्वीकार किया जो कि धर्मचक्र प्रवर्तन सूत्र के नाम से भी जानी जाती है। आषाढ़ पूर्णिमा इसलिए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्योंकि संयोगवश इस दिन गौत्तम बुद्ध अपनी माता महामाया के गर्भ में प्रवेश किया जिनका 10 माह बाद बैशाख पूर्णिमा के दिन जन्म हुआ था। भगवान बुद्ध ने अपने प्रथम उपदेश के माध्यम से मध्यम मार्ग को धम्म के बीजारोपित किया जो कुछ ही समय में लाखों अनुयायी में फैल गया। चार आर्य सत्यों के माध्यम से सांसारिक दुखों के कारण से लोगों को अवगत कराया, तथा उनका निदान भी बताया, जिसे द्ववादस निदान कहते है।

इस प्रकार भगवान बुद्ध ने एक कुशल वैध की तरह ना केवल मनुष्य के सार्वभोमिक रोगों की पहचान की अपितु उन्होंने तृषणा को दुख का प्रमुख कारण बताया, भगवान बुद्ध ने यह भी स्पष्ट किया कि तृष्णाओं की समाप्ति दुखों के अन्त का मात्र एक उपाय है। बुद्ध अनुसार अष्ठागिंक मार्ग पर चलकर मनुष्य दुखों से छुटकारा पा सकता है। बौद्ध धर्म भारत की महानतम आध्यात्मिक परम्पराओं में से एक है। भगवान बुद्ध के जीवन और शिक्षाओं से जुडे कई पवित्र स्थल भारत में स्थित है। उन अनेक स्थानों में चार प्रमुख स्थान है। पहला बौद्ध बिहार जहॉ उन्हें आत्मज्ञान प्राप्त किया, दूसरा सारनाथ जहां उन्होंने अपना पहला उपदेश दिया, तीसरा श्रावस्ति जहां उन्होंने सबसे अधिक चातुरमास किये व प्रवचन दिये, और चौथा कुशीनगर जहां उनका महा परिनिर्वाण हुआ। भगवान बुद्ध के महा परिनिर्वाण के पश्चात उनके शिक्षाओं से जुडे अनेक मठ, तीर्थस्थल, विश्वविद्यालय आदि स्थापित किये गये जो ज्ञान और प्रसिद्धि के केन्द्र रहे है। आज वे सभी स्थल बुद्ध सर्किट के अंग है जो देश विदेश के तीर्थ यात्रियों और धार्मिक पर्यटकों को आकर्षित करते है, जिनमें राजगीर स्थित विश्व शान्ति स्तूप प्रमुख है।

भारत में विद्यमान विश्व के प्राचीनतम गणराज्यों में लोगों को शिक्षा देने वाले भगवान बुद्ध की स्मृति में निर्मित सॉची स्तूप की बनावट राष्ट्रपति भवन में झलकती है, क्योंकि राष्ट्रपति भवन की गुम्मद की बनावट सॉची स्तूप पर आधारित है। आधुनिक युग में भी राष्ट्रपति भवन विश्व के सबसे बडे लोकतंत्र भारत का सबसे महत्वपूर्ण भवन है। जिस पीपल के पेड़ के नीचे समादिष्ट होकर सिद्धार्थ गौत्तम ने बुद्धत्व प्राप्त किया था। उसका एक पौधा आठ साल पूर्व राष्ट्रपति भवन के बगीचे में लगाया है जो व्यस्क रूप ले रहा है। चार साल पहले पूर्व राष्ट्रपति ने राष्ट्रपति भवन परिसर उद्यान में एक और पीपल का पौधा लगाया, ये पौधे वृक्ष बन भगवान बुद्ध की विरासत के साथ राष्ट्रपति भवन को सुशोभित कर रहे है।

राष्ट्रपति भवन के सबसे प्रमुख कक्ष अर्थात दरबार हॉल में राष्ट्रपति कुर्सी के पीछे भगवान बुद्ध की लगभग 1550 साल पुरानी एक मूर्ति रखी है। यह मूर्ति गुप्तकाल के दौरान प्रचलित भारतीय युनानी मूर्ति कला का सुन्दर उदाहरण है, भगवान बुद्ध के सिर के चारों ओर निर्मित प्रभा मण्डल उनके मुख मण्डल की शान्ति, ऑखों में करूणा और हाथ की अभय मुद्रा का सुखद प्रभाव सभी देखने वाले पर्यटकों पर पडता है।

इस प्रकार वहां भौतिक शक्ति तथा सांसारिक वैभव का प्रदर्शन करने के उदेश्य से निर्मित भवन में अहिंसा, करुणा और शान्ति का आध्यामिक अनुभव होता हैं। भारतीय लोकतंत्र पर बौद्ध आर्दशों और प्रतीकों का गहरा प्रभाव है। राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह सारनाथ के अशोक स्तम्भ से लिया गया है। जिसमें धर्मचक्र भी उत्कीर्ण है। हमारे लोकसभा के अध्यक्ष की कुर्सी के पीछे धर्मचक्र प्रवर्तन आहेसूत्र अंकित है। हमारे संसदीय लोकतंत्र में प्राचीन बौद्ध संघों के अनेक प्रतियायें अपनाई गयी है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी महा कारूणिक बुद्ध के सार्वभौमिक प्रेमऔर करुणा के आर्दशों का पालन किया करते थे। भगवान बुद्ध की शिक्षायें गांधी के जीवन व आर्दशों में भी प्रतिबिम्बित होती है। बौद्ध धर्म का गांधी जी पर ऐसा प्रभाव था कि उन्होंने "नमियोहो, लेगे क्यों " मंत्र सीख लिया था और उनकी प्रार्थना सत्र इसी मंत्र के साथ शुरु होती थी।

भगवान बुद्ध ने कहनाथा 'नथी शान्ति परम् सुखम्' जिसका अर्थ है शांति से बड़ा कोई आनंद नहीं है। गौत्तम बुद्ध के उपदेशों में आन्तरिक शांति पर जोर दिया गया है। शान्ति और विकास एक दूसरे को सुदृढ़ बनाते हैं। आषाढ पूर्णिमा के पवित्र दिन इन शिक्षाओं को स्मरण करने का उदेश्य यही है किस भी लोग भगवान बुद्ध के उपदेशों के समंयक अर्थों को अपने चरित्र तथा मन में डाले था विश्व की समस्त बुराईयों और असमानताओं को दूर कर शांति और करुणा से युक्त एक संवेदनशील विश्व का निर्माण करें। आईये आषाढ पूर्णिमा धर्मचक्र के पावन पर्व के अवसर पर बुद्ध के धम्म को जीवन में अपनाने का संकल्प लें।

बौद्ध राधेश्याम कोली

अंत्योदय शिविर में लोगों को राहत मिली

सरवाड़, (निसं)। ग्राम पंचायत सूपां व सांपला में मंगलवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय पखवाड़ा के तहत शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान लोगों को समस्याओं को लेकर राहात मिलने से चेहरे पर खुशी देखी गई।

इस दौरान मौके पर ही राजस्व प्रकरणों का निस्तारण किया गया जिससे ग्रामीणों को बड़ी राहत मिली। शिविर में कई प्रकरणों का समाधान भी किया गया, जिसमें सीमा ज्ञान के 28 प्रकरण, नामांतरण के 39 प्रकरण, रास्तों के 21 प्रकरण, आपसी सहमति बंटवारा 15 प्रकरण, पत्थरगढ़ी के पांच प्रकरण, पंचायत राज विभाग द्वारा पट्टे वितरण किये गए। कृषि विभाग द्वारा मृदा परीक्षण के आठ नमूने व मृदा स्वास्थ्य कार्ड 12 वितरण, वन विभाग द्वारा 40 पौधे वितरण, पशुपालन

- **अंत्योदय पखवाड़ा शिविर में लोगों की समस्याओं का समाधान किया**

विभाग द्वारा 128 पशुओं का टीकाकरण किया गया। खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा तीन आवेदनों का निस्तारण किया गया। वहीं पेंशन के दो आवेदन स्वीकृत किए गए। इस दौरान सरवाड़ उपखंड अधिकारी गुरु प्रसाद तंवर ने ग्राम पंचायत में आयोजित शिविरों का निरीक्षण कर मौके पर मौजूद अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किये और समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया।

इस दौरान मौके पर उपखंड अधिकारी गुरु प्रसाद तंवर, तहसीलदार सरवाड़ बंटी राजपूत, सहायक विकास अधिकारी रघुवीर सिंह, अतिरिक्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी सत्येंद्र आचार्य, ऑफिस कानूनगो प्रकाश मंडारवाल, भू अभिलेख निरीक्षक सियाराम मीणा, पटवारी कृष्ण कुमार सामरिया सांवरलाल कृषि पर्यवेक्षक निर्मला मीणा, बुद्धि प्रकाश मीणा सहित कई अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।